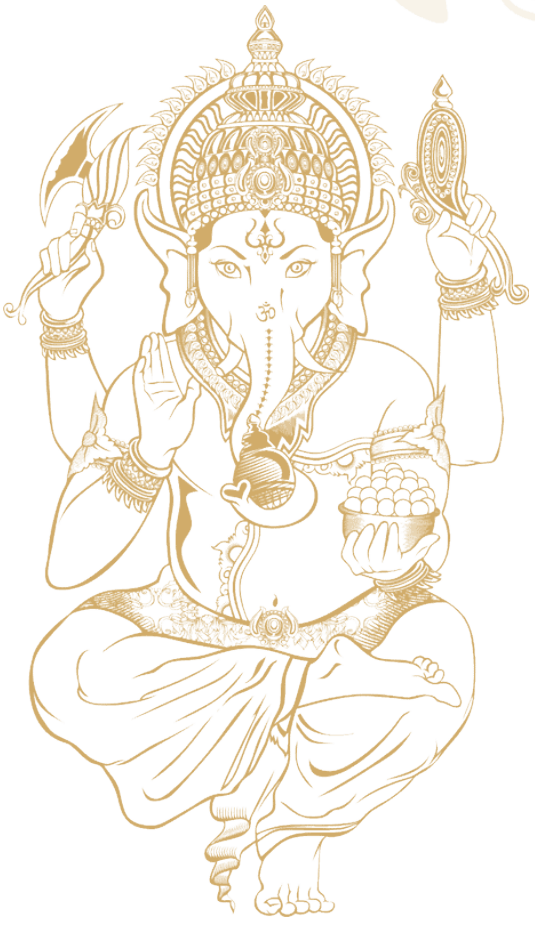

Pragya Dhayal

Tanuja

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121626606

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
21/08/2001	जन्म तिथि	25/04/2005
मंगलवार	दिन	सोमवार
घंटे 20:23:00	जन्म समय	09:05:00 घंटे
घटी 35:51:40	जन्म समय(घटी)	07:55:01 घटी
India	देश	India
Sikar	स्थान	Sikar
27:51:00 उत्तर	अक्षांश	27:51:00 उत्तर
75:14:00 पूर्व	रेखांश	75:14:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:29:04	स्थानिक संस्कार	-00:29:04 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:02:19	सूर्योदय	05:54:59
19:01:33	सूर्यास्त	18:59:34
23:52:32	चित्रपक्षीय अयनांश	23:55:45

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
चन्द्र 9वर्ष 10मा 4दि		03:58:10	मीन	लग्न	मिथु	01:53:04	गुरु 15वर्ष 7मा 3दि	
राहु		04:44:11	सिंह	सूर्य	मेष	11:06:19	शनि	
26/06/2018		10:12:25	कन्या	चंद्र	तुला	20:20:18	28/11/2020	
25/06/2036		27:58:35	वृश्चि	मंगल	कुंभ	01:44:08	28/11/2039	
राहु	08/03/2021	19:29:24	सिंह	बुध	मीन	14:06:57	शनि	01/12/2023
गुरु	02/08/2023	14:15:38	मिथु	गुरु व	कन्या	17:24:55	बुध	10/08/2026
शनि	08/06/2026	29:32:42	मिथु	शुक्र	मेष	17:33:08	केतु	19/09/2027
बुध	25/12/2028	19:55:19	वृष	शनि	मिथु	27:30:16	शुक्र	19/11/2030
केतु	13/01/2030	11:01:24	मिथु व	राहु व	मीन	28:52:09	सूर्य	01/11/2031
शुक्र	12/01/2033	11:01:24	धनु व	केतु व	कन्या	28:52:09	चन्द्र	01/06/2033
सूर्य	07/12/2033	28:44:42	मक व	हर्ष	कुंभ	15:49:20	मंगल	11/07/2034
चन्द्र	08/06/2035	12:55:20	मक व	नेप	मक	23:30:19	राहु	17/05/2037
मंगल	25/06/2036	18:39:55	वृश्चि व	प्लूटो व	धनु	00:21:57	गुरु	28/11/2039

लग्न-चलित

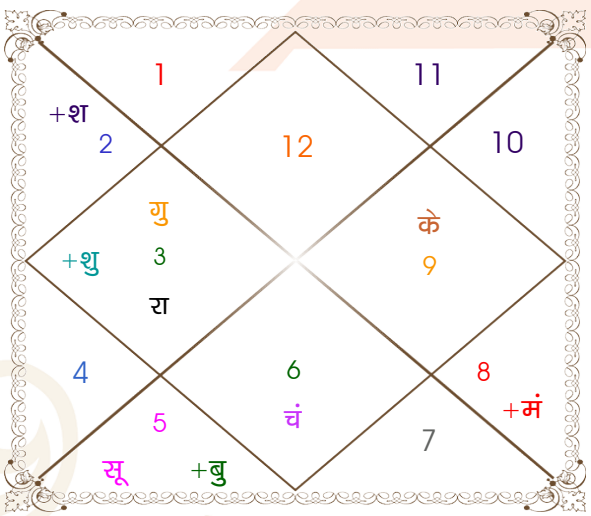

लग्न-चलित

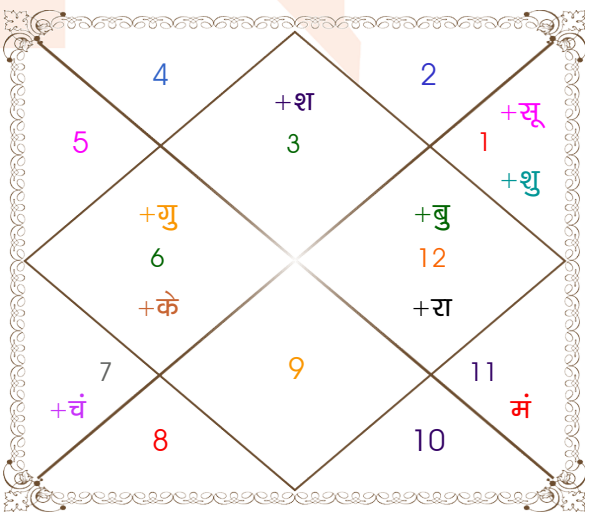

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	महिष	व्याघ्र	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	19.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

च्तंहलं वींलंस का वर्ग मूषक है तथा ज्दनरं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार च्तंहलं वींलंस और ज्दनरं का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

च्तंहलं वींलंस मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

ज्दनरं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

च्तंहलं वींलंस तथा ज्दनरं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।